



# जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल  
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 81  
दिनांक 19.05.2022

## चने की रोग प्रतिरोधक एवं मैकेनिकल हार्वेस्टिंग

### किस्मों को तैयार करने पर दिया गया जोर

### चने की 4 वर्षीय शोध संगोष्ठी (क्यूआरटी) सम्पन्न

जबलपुर 19 मई। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर में चना फसल की 4 वर्षीय (2016–2020) शोध संगोष्ठी (क्यूआरटी) का आयोजन बड़े ही गरिमामय माहौल में किया गया। कार्यक्रम के मुख्यआतिथि अधिष्ठाता कृषि संकाय, डॉ. धीरेंद्र खरे ने अपने उद्बोधन में चना के आनुवांशिक स्तर पर सुधार की असीम संभावना पर बल दिया। साथ ही उन्होंने चने में लगने वाले विभिन्न रोगों पर प्रतिरोधक किस्मों को विकसित करने और मैकेनिकल हार्वेस्टिंग हेतु उन्नत किस्मों को बनाने पर जोर दिया है। संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. जी. के. कौतू द्वारा स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में सेंटल जोन के अंतर्गत आने वाले 16 केंद्रों के चना वैज्ञानिकों ने अपने 4 वर्षों के शोध कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में चना अनुसंधान की विधिवत समीक्षा हेतु भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जी.पी. दीक्षित द्वारा गठित समिति की अध्यक्षता कर रहे, डॉ. एस. के. शर्मा, पूर्व कुलपति हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर एवं क्यूआरटी के सदस्य डॉ. डी.पी. सिंह, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. डी. वी. आहूजा तथा ऑनलाइन माध्यम से जुड़े डॉ. पी. कुमार एवं डॉ. पी. आनंद कुमार ने अपने अनुभवों को चना आनुवांशिकी एवं सुधार पर विवेचना प्रस्तुत किए। विभागाध्यक्ष पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग डॉ. आर. एस. शुक्ला ने क्यूआरटी के आयोजन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान , नई दिल्ली द्वारा विश्वविद्यालय के चयन हेतु आभार व्यक्त किया। चना वैज्ञानिक डॉ. अनीता बब्बर द्वारा विश्वविद्यालय में चल रहे चना अनुसंधान कार्यों की विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की गई। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विभाग के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग रहा।

### भविष्य में चना शोध हेतु अनुशंसा—

1. चने की रोग प्रतिरोधक किस्मों को विकसित करने की बात कही।
2. बायो फोर्टिफाइड किस्मों के शोध किया जाना समय की आवश्यकता।
3. मैकेनिकल हार्वेस्टिंग हेतु उन्नत किस्मों को तैयार करने पर जोर।
4. चने पर लगने वाले विभिन्न रोगों पर प्रतिरोधक किस्मों को विकसित करना।

—000—